P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षित बेरोजगारी

ओम प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
टप्पल, अलीगढ, भारत

सारांश

शिक्षित वर्ग में बेरोजगारी की समस्या दिन प्रतिदिन विकराल रुप धारण करती जा रही है। कल्याणकारी राजा तथा प्रजातन्त्र में शिक्षित बेरोजगारी की समस्या का समाधान खोजना अत्यन्त आवश्यक होगा। शिक्षित वर्ग में दो प्रकार की बेरोजगारी पायी जाती है। दृश्य बेराजगारी तथा अदृश्य बेरोजगारी। दृश्य बेरोजगारी की स्थिति में शिक्षित व्यक्ति पूर्णतः रोजगार विहीन होता है जबकि अदृश्य बेरोजगारी में व्यक्ति अपनी शैक्षिक योग्यता की दृष्टि से निम्न स्तर के रोजगार को स्थायी तौर पर अपना लेता है तथा अपनी योग्यता के अनुरुप रोजगार के प्रयास में रहता है। भारत में दोनों ही प्रकार की बेरोजगारी विशाल मात्रा में है।शिक्षा का व्यवसायोन्मुख न होना, श्रमसाध्य रोजगारों को हीन भावना से देखना, मॉग व पूर्ति के बीच सन्तुलन का न होना, उद्योगों तथा कार्यालयों आदि में स्वचालित उपकरणों व कम्प्यूटरों का बढ़ता उपयोग, स्वरोजगार की प्रवृत्ति का न होना कुछ ऐसे कारण हैं जो शिक्षित वर्ग की बेरोजगारी की स्थिति को जटिल बनाते जा रहे हैं। शिक्षित बेरोजगारी को समाप्त करने के लिए रोजगार के अधिक स्थान बनाने होगें, शिक्षा को व्यवसायोन्मुख बनाना होगा, मॉंग व पूर्ति में समन्वय करना होगा तथा स्वरोजगारी को बढ़ावा देना होगा।

मुख्य शब्द : दृश्य एवं अदृश्य बेरोजगारी, व्यवसायोन्मुख, श्रमसाध्य, स्वरोजगार।

प्रस्तावना

बढ़ती शिक्षित बेरोजगारी ने सभी को चिन्तित कर रखा है। उदाहारण के लिए शिक्षित बेरोजगारी की संख्या जो सन् 1951 में 2.4 लाख थी सन् 1961 में 5.9 लाख, सन् 1971 में 32.8 लाख, सन्1981 में एक करोड़ दस लाख तथा सन 1991 में अनुमानित 1 करोड़ 60 लाख हो गई । 2004–2005 के मुकाबले 2017–18 में इस मामले में ग्राफ नीचे आया है। 2004–05 में शिक्षित महिलाओं में बेरोजगारी की दर 15.2 फीसदी थी जो 2017–18 में बढ़कर 17.3 फीसदी पहुँच गई है। इसी तरह शहरों में शिक्षित पुरुषों में भी बेरोजगारी की दर 2011–12 में 3.5–4.4 फीसदी से बढ़कर 2017–18 में 10.5 फीसदी पहुँच गई है।

देश में बढ़ती बेरोजगारी को नियंत्रित करना अत्यन्त आवश्यक है। एक तो मानवीय साधनों के अल्प उपयोग से राष्ट्र के आर्थिक विकास की गति प्रभावित हो सकती है। दूसरे इससे समाज में निराशा फैल सकती है। कल्याणकारी राज्य व लोकतांन्त्रिक समाजवाद में इन दोनों को सहन नहीं किया जा सकता । अतः बेरोजगारी की समस्या को समाप्त करने सम्बन्धी चर्चा करने से पूर्व आवश्यक होगा कि शिक्षित बेरोजगारी के स्वरुप को अच्छी तरह से समझ लिया जाये।

शिक्षित बेरोजगारी का स्वरुप

शिक्षित वर्ग में दो प्रकार की बेरोजगारी पाई जाती है। दृश्य बेरोजगारी तथा अदृश्य बेरोजगारी । दृश्य बेरोजगारी के अन्तर्गत वे शिक्षित व्यक्ति आते हैं जो किसी भी रोजगार में कार्यरत नहीं हैं। अदृश्य बेरोजगारी से अभिप्राय उस स्थिति से हैं, जिसमें व्यक्ति अपनी योग्यता से कम योग्यतावाले रोजगार को अपना लेने के लिये बाध्य होता है। यद्यपि ये व्यक्ति बेरोजगार नहीं हैं परन्तु क्योंकि उनका रोजगार उनकी योग्यता से कम स्तर का है इसलिए वे भी उच्च स्तर के रोजगार की तलाश में रहते हैं ऐसे व्यक्ति अदृश्य रोजगार की श्रेणी में आते हैं। भारत में दृश्य व अदृश्य दोनों ही प्रकार की बेरोजगारी व्याप्त है। अनेक स्नातक व स्नात्कोत्तर ऐसे हैं जिन्होने कम योग्यता वाले व्यवसायों को मजबूरी में स्वीकार कर लिया है तथा अनेक ऐसे भी हैं जिन्हें किसी भी प्रकार का रोजगार नहीं मिल पाया है। परिणाम स्वरुप देश में बेरोजगारी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है तथा समाज व सरकार के लिये एक गम्भीर चुनौती बन गई है। यदि इस समस्या को समाप्त नहीं किया गया तो यहाँ राष्ट्रीय

विकास के पथ को अवरुद्ध करके एक सुखी व सम्पन्न राष्ट्र के सपने को सदैव के लिए चकनाचूर कर देगी परन्तु इस समस्या का समाधान खोजने से पूर्व इसके मूल कारणों पर विचार करना आवश्यक ही होगा।

शिक्षित बेरोजगारी के कारण

भारत में शिक्षित बेरोजगारी के लिए अनेक कारक उत्तरदायी है इनमें शिक्षा नीति का दोषपूर्ण होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है ब्रिटिश काल से चली आ रही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य दफ्तर का बाबू बनाना है। माध्यमिक या उच्चशिक्षा प्राप्त आज का बुद्धिजीवी वर्ग कम शारीरिक श्रम वाले रोजगार को पसन्द करता है परन्तु सभी शिक्षित व्यक्ति इस प्रकार के रोजगार को प्राप्त नही कर पाते हैं। यहाँ स्थिति शिक्षित बेरोजगारी को बढ़ावा देती है। इसके साथ–साथ शिक्षा व्यवस्था में मॉग व पूर्ति के मध्य किसी भी प्रकार का सन्तुलन स्थापित नहीं किया जाता है। सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये अन्धाधुन्ध विद्यालयों व विश्वविद्यालयों की स्थापना कर दी जाती है। राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये भी शिक्षा का अनियन्त्रित प्रसार किया गया है। इन विद्यालयों व विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करके निकले व्यक्तियों की संख्या रोजगार के उपलब्ध स्थानों से काफी अधिक होती है। जिसकी वजह से शिक्षित बेरोजगारों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। नई तकनीकी के प्रयोग से भी शिक्षित बेरोजगारी मे वृद्धि हुई है। नई–नई स्वचालित मशीनों व कम्प्यूटरों आदि के प्रयोग से अनेक व्यक्तियों के द्वारा किया जाने वाला कार्य एक दो आपरेटरों की सहायता से सम्पन्न हो जाता है। इससे बेरोजगारी की स्थिति और भी अधिक विषम हो जाती है।

स्वरोजगारी का न होना भी शिक्षित बेरोजगारी को बढ़ावा देता है वर्तमान शिक्षा का व्यवसायोन्मुख न होना तथा शिक्षित वर्ग में श्रम के प्रति श्रद्धा न होना स्वरोजगारी के अभाव के प्रमुख कारण हैं वर्तमान शिक्षा छात्रों को उनकी भावी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार करने में पूर्णरुप से असफल रही है। छात्र शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त इस योग्य नहीं हो पाते हैं कि कुछ अर्जित कर सकें। इसके साथ–साथ वर्तमान शिक्षा छात्रों में श्रम करने की प्रवृत्ति व श्रमिक वर्ग के प्रति श्रृद्धा उत्पन्न करने में भी असंगत रही है जिससे छात्र श्रमशील कार्यो को करने में अपमान महसूस करते हैं वर्तमान समय में प्रत्येक छात्र सरकारी नौकरी करना चाहता है। वह स्वयं ही रोजगार करके धन अर्जित करना तुच्छ समझता है।

शिक्षित बेरोजगारी के परिणाम

शिक्षित बेरोजगारी की वजह से गंभीर सामाजिक आर्थिक मुद्दे होते हैं । इससे न केवल एक व्यक्ति बल्कि पूरा समाज प्रभावित होता है। शिक्षित बेरोजगारी के कुछ प्रमुख परिणामों की व्याख्या निम्नलिखित हैंः–

गरीबी में वृद्धि

यहाँ कथन बिल्कुल सत्य है कि बेरोजगारी दर में वृद्धि सेदेश में गरीबी की दर में वृद्धि हुई है। देश के आर्थिक विकास को बाधित करने के लिए बेरोजगारी मुख्यतः जिम्मेदार है।

अपराध में वृद्धि

एक उपयुक्त नौकरी खोजने में असमर्थ बेरोजगार आमतौर पर अपराध का रास्ता लेता है क्योंकि यहाँ पैसा बनाने का एक आसान तरीका है। चोरी, डकैती और अन्य भयंकर अपराधों के तेजी से बढ़ते मामलों के मुख्य कारणों में से एक बेरोजगारी है।

श्रम का शोषण

कर्मचारी आमतौर पर कम वेतन की पेशकश कर बाजार में नौकरियों की कमी का लाभ उठाते हैं। अपने कौशल से जुड़ी नौकरी खोजने में असमर्थ लोग आमतौर पर कम वेतन वाले नौकरी के लिये व्यवस्थित होते हैं। कर्मचारियों को प्रत्येक दिन निर्धारित संख्या के घंटे के लिए भी काम करने के लिए मजबूर किया जाता है।

राजनैतिक अस्थिरता

रोजगार के अवसरों की कमी के परिणाम स्वरूप सरकार में विश्वास की कमी होती है और यहाँ स्थिति अक्सर राजनीतिक अस्थिरता की ओर जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य

शिक्षित बेरोजगार लोगों में असंतोष का स्तर बढ़ता है। जिससे यहाँ धीरे–धीरे चिंता, अवसाद और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में बदलने लगती हैं।

कौशल को नुकसान

लम्बे समय के लिए नौकरी से बाहर रहने से जिन्दगी नीरस और कौशल का नुकसान होता है। यहाँ एक व्यक्ति के आत्मविश्वास को काफी हद तक कम कर देता है।

शिक्षित बेरोजगारी को कम करने के लिए सरकारी पहल

भारत सरकार ने बेरोजगारी की समस्या को कम करने के साथ–साथ देश में बेरोजगारों की मदद के लिए कई तरह के कार्यक्रम शुरू किये हैं। इनमें से कुछ में इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेन्ट प्रोग्राम (IRDP), जवाहर रोजगार योजना, सूखाप्रवण क्षेत्र कार्यक्रम (DPAP), स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण, नेहरू रोजगार योजना (NRY), रोजगार आश्वासन योजना, रोजगार कार्यालयों, विदेशी देशों में रोजगार, लघु और कुटीर उद्योग, रोजगार गारन्टी योजना और मेक इन इण्डिया आदि योजनाये शामिल हैं। इन कार्यक्रमों के जरिये रोजगार के अवसर प्रदान करने के अलावा सरकार शिक्षा के महत्व को भी संवेदित कर रही है और शिक्षित बेरोजगार लोगों को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रही है।

शिक्षित बेरोजगारी को दूर करने के उपाय

शिक्षित बेरोजगारी को समाप्त करने केलिये केन्द्र व राज्य सरकारों ने समय समय पर अनेक प्रयास किये हैं शिक्षित बेरोजगारी को दूर करने के लिये रोजगार के लिये अधिकाधिक स्थान बनाने होगें शिक्षा व्यवस्था में भी कुछ ऐसे परिवर्तन करने होगें जिससे शिक्षा के कारखानों से निकलने वाला उत्पादन बाजार में तुरन्त ही खप जाये। विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में प्रवेश पर अंकुश लगाना होगा तथा शिक्षा को व्यसायोन्मुख बनाकर स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना होगा । छात्रों को रोजगार सम्बन्धी सूचनायें व निर्देशन देने के लिये व्यवसायिक निर्देशन केन्द्र विराट मात्रा में स्थापित किये जाने चाहियें। स्वरोजगार के लिये कम ब्याज पर ऋण

उपलब्ध कराने की सुविधाओं को बढाया जाना चाहिये जिससे शिक्षित वर्ग में स्वरोजगार को प्रोत्साहन मिलें। जनशक्ति नियोजन इस समस्या के समाधान में सर्वाधिक उपयोगी होगा। जनशक्ति नियोजन से राष्ट्र की उपलब्ध जनशक्ति का सदुपयोग हो सकेगा तथा बेरोजगारी की समस्या भी समाप्त हो जायेगी।

हमारी सैद्धान्तिक शिक्षा प्रणाली को व्यवहारिक भी बनाया जायें उसमें व्यवसायिक या औद्योगिक मानसिकता छात्र/छात्राओं में उत्पन्न करने के लिये या तो उद्योग केन्द्रित बनाया जाये या समाजोपयोगी उत्पादक कार्य को पूरी गम्भीरता के साथ छात्र/छात्राओं से कराया जाये एवं उसके विधिवत एवं वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन की व्यवस्था की जाये। शारीरिक श्रम को पाठ्क्रयम का अनिवार्य अंग बनाया जाये राष्ट्रय सेवा योजना को सभी छात्रों के लिये अनिवार्य बनाया जाये। प्रत्येक छात्र–छात्रों के लिये श्रम और समाज सेवी के शिविरों में भाग लेना अनिवार्य किया जाये। ग्राम शिल्प, कुटीर उद्योग, गृह उद्योग को भी हमारी सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिये। प्रत्येक कार्यशाला को एक रोलिंग फंड प्रदान कर कच्चा माल खरीदनें एवं छात्र/छात्राओं को परिश्रमिक भुगतान करने की सुविधा प्रदान की जावे एवं कार्यशालाओं में ऐसा सामान तैयार कराया जाये जो कार्यशालाओं में आता है। टाटपट्टी, चाक मिट्टी, ब्लेकबोर्ड, पेन्ट, स्टेशनरी, ईंट, खपरा आदि। ताकि तैयार माल को शिक्षा विभाग क्रय करके अन्य पाठशालाओं में वितरण कर सके। इस व्यवस्था में कार्यशालाओं को तैयार माल की मार्केटिंग की समस्या से जूझना नहीं पड़ेगा।

प्रत्येक कक्षा की भाषा की पाठ्यपुस्तक में एक या दो पाठ जनसंख्या शिक्षा के जोड़े जावें संचार माध्यम से परिवार नियोजन की शिक्षा भी देनी चाहिये ताकि देश की बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियन्त्रण किया जा सके। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपरोक्तानुसार औद्योगिक या व्यवसायिक शिक्षण प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन की समुचित व्यवस्था करके हम शिक्षित बेरोजगारी पर काफी हद तक काबू पाने में सफल हो सकते हैं।

निष्कर्ष

इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि माँग से कहीं अधिक शिक्षितों की संख्या का होना ही इस समस्या का मूल कारण है। विश्वविद्यालय, कालिज व स्कूल प्रतिवर्ष बुद्धिजीवी, क्लर्क और कुर्सी से जूझने वाले बाबूओं को पैदा करते जा रहे हैं। नौकरशाही तां भारत से चली गई किन्तु नौकरशाही की बूभारतवासियों के मस्तिष्क से नहीं गई है। लार्ड मैकाले के स्वप्न की नींव भारतवासियों के मस्तिष्क में गहराई तक जम गई है।

विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु आया हुआ विद्यार्थी आई0 ए0 एस0 और पी0 सी0 एस0 के नीचे तो सोचता ही नही है। यहाँ हाल हाईस्कूल और इण्टर वालों का भी है। ये छुटभईये भी पुलिस की सब–इन्सपेक्टरी और रेलवे की नौकरियों के दरवाजे खटखटाते रहते हैं। कई व्यक्ति ऐसे हैं, जिनके यहाँबड़े पैमाने पर खेती हो रही है। यदि वे शिक्षा का सदुपयोग वैज्ञानिक प्रणाली से खेती करने में करें तो देश की आर्थिक स्थिति ही सुधर जाए।

यहाँ सत्य है कि हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के कारण देश में रोजगार बढ़ रहे हैं परन्तु यहाँ समुद्र में बूँद के समान हैं। शिक्षा और रोजगार का संबन्ध स्थापित करने के लिए बहुत कुछ कार्य करने की आवश्यकता है। शिक्षित वर्ग की बेकारी को दूर करने के लिए वर्तमान दोषपूर्ण शिक्षाप्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन करना आवश्यक हैं। शिक्षा सैद्धान्तिक न होकर पूर्णतः व्यवहारिक होनी चाहिये, ताकि स्वावलंबी स्नातक पैदा हो सकें और देश की भावी उन्नति में योग दे सकें। औद्योगिक शिक्षा प्रणाली में शरीर और मस्तिष्क का सन्तुलन रहता है।

अभी हमारे देश में पूर्ण शिक्षा का प्रचार हुआ ही कहाँ है? सत्य तो यहाँ है कि हमारे देश की कृषि और औद्योगिक प्रगति में अभी इतनी शक्ति नहीं आई है कि वह शिक्षित बेरोजगारी की समस्या को सही रूप में हल कर सकें।

यदि शिक्षित बेरोजगारी की समस्या से निजात पाना है तो जनसंख्या पर नियंत्रण अवश्यम्भावी है, जिससे व्यक्ति को संसाधनों की कमी नहीं होगी, सरलता से शिक्षा से लाभान्वित होगा जिससे व्यक्तियों के विचार–विमर्श में वृद्धि होगी और वह अपना जीवन स्तर सुरक्षित करने के लिए तत्पर कार्य करेगा। व्यक्तियों को सरल विधि से कार्यों में दक्षता का ज्ञान होगा, स्वरोजगार में वृद्धि होगी जिससे समस्या में निश्चित रूप से कमी आयेगी।

अर्थात शिक्षित बेरोजगारी समाज में विभिन्न समस्याओं का मूल कारण है। हालाँकि सरकार ने इस समस्या को कम करने के लिए पहल की है लेकिन उठाये गये उपाय पर्याप्त प्रभावी नहीं हैं। इस समस्या के कारण विभिन्न कारकों को प्रभावी और एकीकृत समाधान देखने के लिए अच्छी तरह से अध्ययन किया जाना चाहिये। यहाँ समय है कि सरकार को इस मामले की संवेदनशीलता को पहचानना चाहिये और इसे कम करने के लिए कुछ और अधिक गम्भीर कदम उठाने चाहियें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्निहोत्री रविन्द्र – भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्या –दिल्ली :रिसर्च पब्लिकेशन्स ।

अदावल, एस बी तथा एम उनियाल– भारतीय शिक्षा की समस्याएं तथा प्रवृत्तियाँ –लखनऊ : उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

पाण्डेय, राम शुक्ल– भारतीय शिक्षा की समस्याएं – आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

मलैया, विद्यावती– भारतीय शिक्षा की समस्याएं और प्रवृत्तियाँ– दिल्लीः मैकमिलन कम्पनी आफ इन्डिया।

सिंघल, महेश चन्द्र– भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्यायें – जयपुर : राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

गुप्ता, एस पी – भारतीय शिक्षा का विकास तथा समस्याएं – 11, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद–2, शारदा पुस्तक भवन।

मिश्र 'मराल' गार्गीशरण – शिक्षा की समस्याएं और समाधान – कानपुर विकास प्रकाशन ।